सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-1 7 से 21 जनवरी, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

दिल्ली के लड़ाकू युवा समाज को सलाम

जमा रोष फूट पड़ा रायसिना हिल्स पर

दिल्ली के छात्र-नौजवानों से लेकर आम आदमी तक आप सबको सलाम! भारत के इतिहास में एक घोरतम अंधकार के समय आपने सूर्य की किरण बन कर लोगों को जगा दिया है। सिखा दिया है कि इन्सान की तरह जीना है तो इसी रास्ते पर चलना होता है। पता नहीं किन शब्दों और विशेषणों से आपका सही मायने में अभिनन्दन किया जाए, मन के जज्बे और भरोसे को सही ढंग से व्यक्त किया जाए। फिर भी यह कहा जा सकता है कि पिछले कुछ दिनों से दिल्ली के राजपथ की तस्वीर ने हमें आवेग से सराबोर कर दिया है, यह विश्वास और आस्था ला दी है कि नहीं, शासक-शोषक इस देश के लोगों का सब कुछ तबाह नहीं कर पाए हैं। चरित्र-रूचि-नीति-नैतिकता युवा समाज को अन्याय के खिलाफ सीना तान कर खड़े होने की ताकत देती है, इसे पंगू और खत्म करने की देश में हर तरफ चाहे लाख कोशिश हों लेकिन दिल्ली के युवा समाज ने जता दिया कि बेरहम शासन-शोषण चलाते जाने पर भी, अनैतिक की गंदगी फैलायी जाने पर भी किसी देश में इन्सानियत को पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता। वह जाग उठती है, गरज उठती है, समाज को जगा देती है।

23 वर्षीय गेंगरेप पीड़ित छात्रा आज हमारे बीच नहीं है। 13 दिन तक मौत से जूझते हुए आखिर वह हमसे बिछुड़ गई। लेकिन जाते-जाते उसने देश के सोये हुए लोगों को नारियों पर होने वाले अपराधों पर कारगर रोक लगाने के लिए देश में एक जोरदार सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन गठित करने की जरूरत को महसूस कराते हुए एकताबद्ध कर दिया। उनकी दुखद मौत से पूरा देश शोक में डूब गया। तहेदिल से श्रद्धांजलि देते हैं गेंगरेप पीड़ित लड़की के प्रति। नाम स्वाभाविक है कि अप्रकाशित है। इससे लोगों के आवेग और श्रद्धा ने अड़चन नहीं मानी। किसी ने नाम दिया है 'दामिनी', अर्थात् बिजली, किसी ने उसे सिस्टर करेज' अर्थात् 'साहसी बहन' नाम से पुकारा है, अनेक सोचते हैं 'निर्भया' शायद श्रेष्ठ नामकरण होगा। देश की बलात्कार की शिकार उत्पीड़ित नारी शक्ति का सही मायने में प्रतीक बन गई है 'दामिनी'। हस्पताल के बैड पर मौत से पंजा लड़ाते-लड़ाते ही उनसे घटना के समय उसका

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉमरेड अनिल सेन नहीं रहे

एसयूसीआई (सी) के पूर्व केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड अनिल सेन ने काफी अर्से तक विभिन्न रोगों से बीमार रहने के बाद गत 24 दिसम्बर को कलकत्ता हार्ट क्लिनिक एण्ड हॉस्पीटल में अन्तिम साँस ली। मौत के समय उनकी उम्र 85 साल थी। उनकी मौत पर पार्टी के सभी कार्यालयों पर लाल झण्डे आधे झुका दिये गये और कॉमरेडों ने काले बैज धारण किये। (विस्तारित रिपोर्ट आगामी अंक में)

जंतर मंतर पर धरना सभा को सम्बोधित करते हुए एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. रीतु कौशिक

जंतर मंतर पर धरना सभा को सम्बोधित करते हुए एआईडीवाईओ की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रकाश

दिल्ली में पैरामेडिकल छात्रा के साथ हुए सामूहिक बलात्कार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली: दिल्ली में एक छात्रा के साथ हुए सामूहिक बलात्कार के विरोध में एआईएमएसएस, एआईडीवाईओ और एआईडीएसओ के द्वारा 18 दिसम्बर को एक विरोध प्रदर्शन किया गया और इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए गृहमंत्री को एक ज्ञापन भी सौंपा। दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों से आए प्रदर्शनकारी प्रात: 11 बजे जंतर-मंतर पर एकत्रित हुए। प्रदर्शन वहीं विरोध सभा में तब्दील हो गया। विरोध सभा को एसयूसीआई (सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल के अलावा एआईएमएसएस दिल्ली राज्य अध्यक्षा प्रो. सुबोध शर्मा, एआईडीवाईओ की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रकाश देवी, एआईडीएसओ के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. भास्करानंद तथा मध्य प्रदेश की एआईएमएसएस संयोजिका कॉ. रचना अग्रवाल और भोपाल की जिला प्रभारी कॉ. जॉली सरकार ने भी प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित किया। विरोध सभा का संचालन एआईएमएसएस की दिल्ली सचिव कॉ. रीतु कौशिक ने किया।

छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म की निंदा करते हुए वक्ताओं ने कहा कि दिल्ली में भयावह रूप से बढ़ते अपराधों ने सारी हदें पार कर दी हैं। यह हर विवेकशील व्यक्ति के लिए एक चिंता का विषय बना हुआ है कि देश के बड़े शहरों में होने वाले अपराधों में से एक तिहाई अपराध देश की राजधानी दिल्ली में ही हो रहे हैं। एक छात्रा के साथ दरिंदगी से सामूहिक बलात्कार कर उसे अर्ध मृत स्थिति में फेंक देने की घटना और उसी दिन एक और नाबालिग बच्ची के साथ घटी बलात्कार की घटना यह दर्शाती है कि सरकार महिलाओं पर दिन प्रतिदिन हो रहे गंभीर अपराधों के विषय में कितनी उदासीन है।

वक्ताओं ने कहा कि सरकार की जनविरोधी उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और निजीकरण की नीतियों के कारण समाज में पतनशील संस्कृति, अश्लीलता, शराबखोरी तथा अनैतिकता तेजी से बढ़ रही है। टी.वी, पत्र-पत्रिकाओं, फिल्मों व सौंदर्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से अश्लीलता परोसी जा रही है। उसमें नारी देह को उपभोग की वस्तु के रूप में पेश किया जा रहा है। समाज के सांस्कृतिक माहौल को और भी गर्त में धकेलने और छात्रों-नौजवानों की नैतिक रीढ़ को तोड़ डालने के लिए सरकार स्कूल स्तर पर यौन शिक्षा लागू कर रही है। फलस्वरूप महिलाओं पर आए दिन अत्याचार हो रहे हैं।

वक्ताओं ने छात्रा के साथ हुए बलात्कार की घटना के दोषियों को तुरन्त हिरासत में लेने और उन्हें उदाहरणमूलक सजा देने की मांग की तथा समाज की तमाम महिलाओं-छात्रों-नौजवानों से अपील की कि वे इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए एक ताकतवर सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन खड़ा करने के लिए आएं।

बढ़ती बेरोजगारी, अश्लीलता, शराबखोरी, भ्रष्टाचार के खिलाफ रोष प्रदर्शन

बढ़ती बेरोजगारी, अश्लीलता, शराबखोरी, भ्रष्टाचार के खिलाफ ऑल इण्डिया डीवाईओ के बैनर तले नौजवानों ने 12 दिसम्बर को नागपुर में रोष प्रदर्शन किया। इस अवसर पर एआईडीवाई की महासचिव कॉ. प्रतिभा नायक भी मौजूद थी।

बुद्धिजीवी मंच की ओर विरोध प्रदर्शन

दिल्ली सहित देश भर में लगातार बढ़ते बलात्कारों व महिला उत्पीड़न के प्रतिवाद में 24 दिसम्बर को कोलकाता के राजपथ पर उतर आये प्रो. तरूण सान्याल, विभास चक्रवर्ती, प्रतुल मुखोपाध्याय सहित सैकड़ों लोग

दिल्ली आन्दोलन के समर्थन में देश के अन्य राज्यों में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)

पिलानी | प्लाजा, सेक्टर-17, चण्डीगढ़ | रेवाड़ी

शोक की शक्ति को, नफरत की आग को अप्रतिरोध्य संघर्ष में तब्दील करें

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष की अपील

दोस्तो,

दिल्ली की सामूहिक बलात्कार की पीड़ित छात्रा की दुखद मौत की खबर से सारा देश शोक से उद्वेलित है, देशवासी शोकाहत हैं। हमारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) भी आज इस देश के गाँव-शहरों में अनगिनत मौन जुलूस निकाल कर इसी वेदना को व्यक्त कर रही है। आन्दोलनों के और भी कार्यक्रम चलते रहेंगे। हम इस युवती के शोक संतप्त परिवार और समव्यथित देशवासियों के साथ तहेदिल से संवेदना जताते हैं।

हम जानते हैं कि यह युवती आक्रान्त और बारबार बलात्कारित होने पर भी बिल्कुल भयभीत न होकर आखिर तक जी जान से प्रतिरोध करती रही, जिसके फलस्वरूप गुस्साए अपराधियों ने शारीरिक तौर पर जख्मी करके उसे और उसके साथी को अधमरा करके सड़क पर फैंक दिया। हम इस बहादुर लड़की के इस संघर्ष, इस साहस और तेज के प्रति श्रद्धा-सम्मान जताते हैं। जब तक होश रहा, उस साहसी लड़की ने कहा, 'मैं जिन्दा रहना चाहती हूँ', यह देश, राष्ट्र उसे बचा नहीं पाया। वह बार-बार मांग करती गई कि 'अपराधियों को सजा मिलनी चाहिए।' क्या असली अपराधियों को सजा होगी'? आज हमारे विवेक को यह सवाल झकझोर रहा है।

हम चाहते हैं कि अपराधियों को कठोर सजा मिले, हम चाहते हैं कि सजा देने लायक कठोर उदाहरणमूलक कानून का प्रावधान हो फिर इसी के साथ हम यह भी कहना चाहते हैं कि चाहे जितना भी कठोर कानून और सजा देने का प्रावधान क्यों न हो, बलात्कार-सामूहिक बलात्कार होते ही रहेंगे, बढ़ते ही जाएंगे। प्रतिदिन प्रतिपल इस देश में बलात्कार हो रहे हैं, छोटी-छोटी बच्चियों को भी नहीं बख्शा जा रहा है। यह अगर सभ्यता है, तो बर्बरता किसे कहते हैं? इसलिए जब तक बलात्कार रोकने की स्थाई व्यवस्था नहीं होगी, तब तक हजारों-हजार नारियों से बलात्कार होगा, अनेक जान से हाथ धो बैठेंगी, बाकी जिन्दा लाश बन कर रह जाएंगी।

इस समय 'देश के जाने-माने' नेता शोक के आँसुओं की झड़ी लगा रहे हैं, और मन ही मन उम्मीद लगा रहे हैं कि कुछ दिनों बाद सब कुछ दब जाएगा, रफा-दफा हो जाएगा, जैसे इससे पहले भी हुआ है। कुछ दिनों बाद बड़े आडम्बर के साथ 26 जनवरी मनाई जाएगी, नेताओं की मौजूदगी में बार-बार तोपों की सलामी से गर्व के साथ दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का ढिंढोरा पीटा जाएगा, देश कितना आगे बढ़ा (!) है इसकी रंगीन तस्वीर नेतागण पेश करेंगे। राष्ट्रपति भवन, राज भवनों, मंत्रालयों को सुदृश्य रोशनी की लड़ियों से सजाया जाएगा। आँखें चौंधिया देने वाले उत्सव-मेलों में शायद आज का यह गम दबा देने की कोशिश होगी। इस उत्सव की रंगीन झिलमिलाती रोशनी तले देश भर में दुख का अंधेरा देखा जाएगा। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री उद्योगपति बिजनेस मैन, मुख्यमंत्री और राजनैतिक पार्टियों के नेता जब फाइव स्टार होटलों में नाच-गाने-मौज-मस्ती में लीन होकर स्वाधीनता उत्सव मना रहे होंगे तब देखा जाएगा कि उनकी भोज सभा, डिनर पार्टी से डस्टबिन में फैंकी गई झूठन के लिए हजारों हजार भूखे बच्चों की टोली छीना झपटी कर रही होगी, जिनके पास खाने को कुछ नहीं, रहने को घर नहीं, न ही हैं सर्दी में पहनने लायक कपड़े, जिन्हें ये भी नहीं पता कि उनके माँ-बाप कौन हैं; छिन्न-विछिन्न जीवन के धारा प्रवाह में वे न जाने कहाँ खो गए हैं। आज तो सारे देश में हैं करोड़ों बेरोजगार-अर्धबेरोजगार, नौकरी से निकाले गए मजदूर-कर्मचारी, जमीन से बेदखल बेकार गरीब किसान-खेत मजदूर! सालों साल कितने लाख लोग भुखमरी में, बिना इलाज के मारे जा रहे हैं, प्रतिदिन की असहनीय मृत्यु यंत्रणा से सदा के लिए बच जाने के लिए न जाने कितने लोग आत्महत्या का रास्ता चुन रहे हैं! न जाने कितनी लाख औरतें भूखे बच्चे का बिलखना न सहन कर पाने पर प्रतिदिन देह बिक्री के बाजार में खुद को बेच दे रही है। न जाने कितनी लाख लड़कियों और महिलाओं की तस्करी की जा रही है, न जाने कितने बच्चे बिकते जा रहे हैं। यह तस्वीर दिल दहलाने वाली है, दुख की, गहरी व्यथा-वेदना की तस्वीर है! दूसरी तरफ मुट्ठीभर कुछ पूँजीपति व्यवसायी परिवार सारे देश की धन-दौलत, सब कुछ के मालिक बने हुए हैं। सारे देश को लूट रहे हैं, जैसे एक समय ब्रिटिश साम्राज्यवादी लूटा करते थे।

यही क्या वह आजादी है, जिसके लिए खुदीराम बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अश्फाकउल्ला खाँ, सूर्यसेन, प्रीतिलता आदि ने जान कुर्बान की थी? क्या इसीलिए नेताजी सुभाषचन्द्र ने महान संघर्ष चलाया था? उन्होंने क्या दुश्स्वप्न में भी कभी सोचा था कि आजाद भारत की यह शोचनीय परिणति होगी, इस तरह आए दिन महिलाओं से बलात्कार होगा? तो फिर यह आजादी किसकी है? वास्तव में यह है पूँजीपतियों, बड़े-बड़े बिज़नैसमैनों की बेरोकटोक लूट की आजादी और उनके द्वारा पैदा किये और शरण दिये गए असामाजिक तत्वों की बेखटके डकैती-खून-बलात्कार करने की आजादी। कांग्रेस, बीजेपी, सीपीआई(एम), तृणमूल, एसपी, बीएसपी, डीएमके, एआईडीएमके, जेडी, बीजेडी, आदि सरकारी पार्टियाँ इन पूँजीपतियों की ही तावेदार हैं, इनसे मनी पॉवर का आशीर्वाद पाकर ये जब सरकारी कुर्सी पर बैठने का मौका पाती हैं, तो इन्हीं पूँजीपतियों की पालिटिकल मैनेजर के तौर पर काम करती हैं। किसे ये मौका मिलेगा, इसी को लेकर उनके बीच खींचातानी और मारामारी है।

इन में से जो भी गद्दी पर जब बैठती हैं, वही दोनों हाथों से पब्लिक का पैसा लूटती है, ये सभी भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबी हुई हैं। इन सब के शासनकाल में नारियों से बलात्कार रोजमर्रे की घटनाएं हो गई हैं। हालांकि अपनी पार्टी के शासित राज्यों में बलात्कार की घटना घटने पर ये ऐसा भाव दर्शाती हैं मानो वह कुछ भी नहीं हो, सब बदनाम करने के लिए कुप्रचार हो, मनगढ़ंत बात हो। आज ये सभी इस छात्रा की मौत पर कैमरों के सामने खड़े होकर घड़ियाली आँसू बहा रहे हैं, और हिसाब लगा रहे हैं कि आगामी चुनावों में कौन-कितना फायदा उठा पाएगा। ये नारी को किस नजर से देखते हैं, नारी से बलात्कार को किस तरह देखते हैं, इसे साफ तौर पर समझा जा सकता है कुछ दिन पहले गुजरात के बीजेपी मुख्यमंत्री की इस कथित टिप्पणी से-'50 करोड़ रुपये की कीमत की गर्लफ्रैण्ड'; दिल्ली के उत्ताल विक्षोभ प्रदर्शन के बारे में कांग्रेस के नए-नए एमपी राष्ट्रपति के बेटे की इस कटु उक्ति से-'विक्षोभ प्रदर्शनकारी छात्राएं नहीं, पाउडर-लिपस्टिक लगाने वाली लड़कियाँ हैं; कलकत्ता के पार्कस्ट्रीट की बलात्कार पीड़ित महिला के प्रति तृणमूल की महिला एमपी की इस कदर्य उक्ति से-'उससे बलात्कार नहीं हुआ, खरीददार के साथ मोल भाव को लेकर झगड़ा हुआ था'; सीपीएम के विधायक की पश्चिम बंगाल की महिला मुख्यमंत्री के प्रति इस भद्दी टिप्पणी से-'उनका बाजार रेट क्या है?' ये सभी पार्टी नेता हैं। इनकी पार्टियाँ अलग-अलग हैं, लेकिन कल्चर क्या अलग है? गरीब मेहनतकश मजदूर की हृदयवृत्ति मरती जा रही है यह देखकर बहुत दिनों पहले साहित्यकार शरतचन्द्र ने गहरी वेदना के बीच श्रीकान्त उपन्यास में लिखा था कि इन्सान का मरना मुझे इतनी व्यथा नहीं देता क्योंकि जो आदमी पैदा होता है वह एक दिन मरता ही है। व्यथा देता है इन्सानियत का मर जाना देखना। अमीरों के धन के लोभ ने इन्सान को हृदयहीन पशु में तब्दील कर दिया है। क्योंकि अमीर जानते हैं कि इन्सानों को पशु बनाये बिना उनसे पशु की तरह काम नहीं लिया जा सकता। पूँजीवाद स्नेह-ममता, परोपकारिता को खत्म कर रहा है। यह देखकर उन्होंने यह बात कही थी। लेकिन वे और उनके पूर्वगामी विद्यासागर, ज्योतिबा फूले, विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ, लाला लाजपत राय, तिलक, गोप बधु, प्रेमचन्द, सुभाषचन्द्र, नजरूल देश की इस शोचनीय परिणति, इन बलात्कारों, सामूहिक बलात्कारों को देख कर नहीं गए, ऐसे दुर्दशा होगी यह उन्होंने कभी सोचा भी नहीं होगा। साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासित भारत में धार्मिक चिन्तन आच्छन्न सामन्तवादी ढाँचे में पुरुषवादी समाज में बाल विवाह, सती दाह प्रथा, बहुविवाह, विधवाओं की यंत्रणा, इन सब मध्ययुगीन अत्याचारों का बोलबाला था। जिसे देखकर एक दिन विद्यासागर ने खेद के साथ कहा था, 'जिस देश में पुरुषशक्ति इतनी निष्ठुर है, जिनमें दया-मोहमाया नहीं है, न्याय-अन्याय का बोध नहीं है, उस देश में आभागी लड़कियाँ और पैदा न हों तो ही अच्छा है'। आज के इन बलात्कारों, सामूहिक बलात्कारों को देख कर वे क्या कहते?

भारत का पूँजीवादी शासक वर्ग किस तरह देश की इन्सानियत को खत्म कर रहा है, यह देखकर 36 साल पहले सर्वहारा के महान नेता और इस युग के विशिष्ट

(शेष पृष्ठ 4 पर)

दिल्ली आन्दोलन के समर्थन में देश के अन्य राज्यों में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)

अपील

(पृष्ठ 3 का शेष)

मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष ने गहरे उद्वेग के साथ कहा था कि एक राष्ट्र भूखा-अधभूखा रहते हुए भी, हजारों अत्याचार-उत्पीड़नों के बावजूद अन्याय-शोषण के खिलाफ लड़ सकता है, बशर्ते कि उसके पास सही आदर्श और उन्नत नैतिक बल हो। धुरन्धर शासक वर्ग जानता है कि यह शक्ति रहने से बन्दूक-तोप-गोला बारूद से भी संघर्ष को ध्वस्त नहीं किया जा सकता, इसलिए वे नैतिक रीढ़ को तोड़ डाल रहे हैं, अतीत के मनीषियों की शानदार परम्परा को अवलुप्त कर डाल रहे हैं, स्वदेशी आन्दोलन व नवजागरण काल के उन्नत नैतिक मान से विछिन्न करके छात्र-नौजवानों और आम आदमियों को छिन्नमूल कर दे रहे हैं। दूसरी तरफ कुत्सित व्यक्तिकेन्द्रिकता, भोग-विलासिता, जुए-सट्टे-कैबरे डांस-ब्लू फिल्मों और गंदी यौनता के दलदल में डुबो रहे हैं। क्रान्ति से भयभीत पूँजीवाद की आज यही जरूरत है, इन्सानियत को, यौवन को खत्म करना इसकी जरूरत है। इसीलिए है यह शोचनीय परिस्थिति! सही मायने में इन्सान की तो बात ही छोड़ दीजिए, यहाँ तक कि पशु भी बलात्कार-सामूहिक बलात्कार नहीं करते। तो फिर ये बलात्कारी मानव भी नहीं हैं, पशु भी नहीं हैं। मनुष्यत्वहीन 'मानव देहधारी' ये बलात्कारी किसी माँ के गर्भ से नहीं पैदा होते। बच्चे निष्पाप पैदा होते हैं। प्रत्येक प्राणी ही अपनी चारित्रिक विशेषताओं के साथ पैदा होता है। लेकिन मानव केवल मानव देह लेकर ही पैदा नहीं होता है, अपने चारित्रिक गुण-दोष मौजूदा समाज से ही हासिल करता है। इन बलात्कारियों का जन्म मानवता के दुश्मन मौजूदा पूँजीवाद के ही हुआ है। जब तक पूँजीवाद रहेगा, अनगिनत बलात्कारी पैदा होते रहेंगे, बलात्कार भी बढ़ते रहेंगे। इसलिए दुखमय जीवन के सारे संकटों के खात्मे की तरह स्थाई तौर पर महिलाओं की सुरक्षा और इज्जत-आबरू की रक्षा और बलात्कार-सामूहिक बलात्कार रोकने के लिए चाहिए इस सब की मूल जड़ इस पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकना, चाहिए नई समाजवादी व्यवस्था की स्थापना। वरना आज के इस शोक, आँखों से आँसुओं के बहने का कोई भी मोल नहीं रह जाएगा।

दिल्ली में इतनी कड़ाके की सर्दी में काफी दिनों से हजारों हजार साहसी छात्र-नौजवान लाठी, वाटर कैनन, आँसू गैस, किसी की भी परवाह किये बिना जिस बहादुरी के साथ यह ऐतिहासिक संघर्ष चला रहे हैं, जिस संघर्ष में सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने अगुआ भूमिका निभाई है, उनका हम गर्मजोशी के साथ अभिनन्दन करते हैं। हम आशा करते हैं कि इस संघर्ष की प्रज्ज्वलित मशाल सही क्रान्तिकारी आदर्श से मजबूती पाकर फिर असंख्य पूँजीवाद का नाश करने वाले आज के दिनों के क्रान्तिकारी योद्धा महान मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष की चिन्तनधारा का झण्डा बुलन्द करने वाले खुदीराम, भगत सिंह, प्रीतिलताओं को पैदा करके सारे देश भर में सम्प्रसारित सुसंगठित क्रान्तिकारी संग्राम को गठित करेगा।

आज के अपने इस शोक को शक्ति में तब्दील करें, नफरत की आग को अप्रतिरोध्य संघर्ष में तब्दील करें।

दिल्ली में पैरामेडिकल छात्रा के साथ हुए नृशंस सामूहिक बलात्कार की तीव्र निन्दा की

ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) की महासचिव डॉ. एच.जी. जयलक्ष्मी ने 18 दिसम्बर को जारी एक बयान में कहा :

दिल्ली में 16 दिसम्बर की रात को चलती बस में 23 वर्षीय मेडिकल छात्रा के साथ हुए अत्यंत बर्बर सामूहिक बलात्कार की घटना की ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) कड़े से कड़े शब्दों में निन्दा करती है। लड़की जीने के लिए मौत से जूझ रही है। वह गंभीर चोटों के साथ वेन्टीलेटर पर है। उसका मित्र जिसने उसे बचाने की कोशिश की, उसे भी बुरी तरह पीटा गया और दोनों को बस से बाहर फेंक दिया गया।

इस घटना से देश भर में संताप की लहरें फैला दी हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में महिलाओं पर आये दिन होने वाले अपराधों के दर्ज मामलों में से यह तो पानी में भारी हिमखण्ड का सतह से ऊपर वाला हिस्सा है, ज्यादातर मामले तो पानी में गर्क हिस्से की तरह दबे ही रह जाते हैं। एनसीआरबी (नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो) ने वर्ष 2011 में 2, 61, 474 मामले दर्ज किये हैं! केन्द्र व राज्यों, दोनों की ही सरकारों का जिन्होंने ऐसे एक विनाशकारी घटनाक्रम पर मुजरिमाना लापरवाही बरती है, शर्म से सिर झुक जाना चाहिए। मीडिया के जरिये कुसंस्कृति का बेलगाम प्रचार-प्रसार, शराब की धड़ल्ले से बिक्री को दिया जा रहा बढ़ावा, अधिकारियों में पितृसत्तात्मक रुख-रवैया, राजनेताओं द्वारा किया जा रहा असामाजिक तत्त्वों का पालन-पोषण और संरक्षण, इन्साफ देने में ढील-यह सब मिल कर अपराधियों के होंसले बढ़ा रहा है। वे अमानवीय अपराध करके साफ बच जाते हैं।

एआईएमएसएस इस अपराध में संलिप्त सभी दोषियों को अत्यंत कड़ी सजा देने की माँग करता है। संगठन यह भी मांग करता है कि दिल्ली सरकार यह सुनिश्चित करे कि पीड़िता को बेहतरीन इलाज मिले। संगठन पूरे देश भर में जोरदार प्रतिवाद संगठित करने के लिए सभी राज्य कमेटियों का आह्वान करता है और अनिच्छुक सरकार पर तुरन्त कदम उठाने के लिए दबाव डालने के वास्ते इन प्रतिवादों को और भी जोरदार बनाने के लिए सहयोग के अपने हाथ बढ़ाने की महिलाओं से अपील करता है।

दिल्ली आन्दोलन के समर्थन में देश के अन्य राज्यों में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)

दिल्ली के लड़ाकू...

(पृष्ठ 1 का शेष)

साथ देने वाले अपने दोस्त को पहचान लिया, जानना चाहा कि अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया है कि नहीं! अत्यन्त साधारण घर की मासूम एक छात्रा की ऐसी असाधारण भूमिका ने व्यापक छात्र समाज के जमीर को जगा दिया है।

दिल्ली सहित समूचे भारत में आए दिन बलात्कार की बर्बरता हो रही है। फिर भी दिल्ली की यह घटना घटने पर छात्र-नौजवानों से लेकर आम आदमी और घर की महिलाओं तक सड़कों पर क्यों निकल आए? 2013 के शुरूआती दौर में पहुँचने पर इस बात को कोई नकार नहीं पा रहा है कि बलात्कार की इस घटना ने नागरिकों के मन में लम्बे अर्से से जमा रोष की बारूद में चिंगारी का काम किया है। शासक दल और सरकारी गद्दी पर काबिज होने के लिए लालायित विपक्षी दलों के नेता देशवासियों से लगातार विकास का वादा करते जा रहे हैं, देश किस तरह प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता जा रहा है उसके आंकड़े दिये जा रहे हैं। इस झूठ को सालों साल से सुनते आ रहे हैं देशवासी। संसद में नारियों पर हिंसा बन्द करने के लिए कानून बना हुआ है। बच्चों की रक्षा का नेताओं ने वचन दिया हुआ है, कानून भी है। लेकिन प्रतिदिन सैकड़ों हजार नारी घर में और घर से बाहर लाञ्छित, अपमानित और उत्पीड़ित होती जा रही हैं, अभावग्रस्त परिवारों की बच्चियों सहित लड़कियों की नारी देह के सौदागरों के हाथों में तस्करी हो रही हैं। दूसरी तरफ परिवारों के लड़के-लड़कियों द्वारा प्यार में असवर्ण विवाह करने पर; 'परिवार के सम्मान की रक्षा' के नाम पर उनका कत्ल किया जा रहा है। यह मानो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा हो। बन्द कल-कारखानों के मजदूर, बेरोजगार युवक, कर्ज के बोझ तले दबे लाचार किसानों के खुदकुशी करने पर नेता कहते हैं, 'ये सब तो पारिवारिक कलह के नतीजे हैं', देश की आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था का इसमें कोई दोष नहीं है। सरकार जिम्मेदार नहीं है। काले धन के कारोबारी छाती तान कर घूमते हैं। देश के लोगों को भूखा मार कर जो मुनाफे के अम्बार पर कुण्डली मारे बैठे हैं, शासक उन्हें फूलों के हार और पुरस्कारों से नवाज कर कहते हैं 'ये ही देश की प्रगति के प्रतीक हैं'। सत्ताधारियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगने पर मंत्री उन्हें क्लीन चिट देने लगते हैं, उन पर तुरन्त मुकदमा चलाने और दोषियों को सजा देने की व्यवस्था करने की बजाय मंत्री यह प्रचार करने के लिए बेचैन हो उठते हैं कि 'आरोप कितने झूठे हैं'। 26 जनवरी और 18 अगस्त को सुरक्षा के घेरे में खड़े होकर शासक भाषण देते हैं, भारत की संसदीय व्यवस्था की जय जयकार करते हैं और तेल के दाम बढ़ाते जाते हैं, ये एमपी, एमएलए की तन्ख्वाह-भत्ता, सुख-सुविधाएं घृणित निर्लज्जता से बढ़ाते जाते हैं। चुनाव से पहले जब कांग्रेस-बीजेपी-सीपीआई(एम) के उम्मीदवार सम्पत्ति के आधे-अधूरे ब्योरे देते हैं, तो देखा जाता है कि आम आदमी की स्वार्थ रक्षा का नाम लेकर करोड़पति मालिक भारतीय जनतंत्र की मर्यादा की रक्षा करने जा रहे हैं।

क्या केवल इतनी ही बात है? दिल्ली के राष्ट्रपति

भवन के सामने इकट्ठा होकर राष्ट्रपति के नाम खुली चिट्ठी में छात्र-छात्राओं ने सवाल उठाया है–आप क्या बिल्कुल नहीं जानते कि इस देश में हर 20 मिनट में एक बलात्कार की घटना घट रही है। यही नहीं, बल्कि उनके और भी सवाल हैं–नारी उत्पीड़न का आरोप मत्थे लेकर भी जिस संसद का सदस्य बना जा सकता है, वह संसद क्या सुरक्षा देगी? समाचार पत्रों ने दिल्ली के एक स्वयंसेवी संगठन के सर्वेक्षण को उद्धृत करके बताया है–पिछले 5 साल में इस तरह के आरोपों के बावजूद सौ से अधिक उम्मीदवार चुनाव लड़े हैं, जिनमें से कम से कम 30 के खिलाफ सरासर बलात्कार के आरोप हैं।

कोई-कोई सोच रहा है या हो सकता है कि कह भी रहा हो कि यह है सामाजिक अव्यवस्था के खिलाफ लोगों के जमा हुए रोष का इज़हार। हम कहते हैं कि नहीं, अव्यवस्था नहीं, यही है व्यवस्था, यही है भारतीय राज व्यवस्था की तस्वीर। यही है आज की धनतांत्रिक या पूँजीवादी व्यवस्था का चरित्र और विशेषता। दुनिया के देश-देश में जहाँ कहीं भी पूँजीवादी व्यवस्था है, वहाँ हर जगह नागरिक जीवन की यही तस्वीर है। मानव इतिहास में जिस शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था की उम्र ढल चुकी है, जो पूँजीवादी समाज आज परिवर्तन की यंत्रणा से छटपटा रहा है, उसे संसदीय जनतंत्र के हजारों उपचारों से, झूठ और छल-फरेब के धूम्र-पट में छिपाना चाहने पर भी, सड़ी-गली लाश की बदबू को फैलने से रोका नहीं जा सकता। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि यह जहर फैलाती है। सारे समाज को विषाक्त कर देती है। रसातल में नीचे गिराती है समाज को। यही हम सभी पूँजीवादी देशों में होता देख रहे हैं। राजनीति में चरित्र-नैतिकता-इन्सानियत का जो अध:पतन देख रहे हैं, गौर करने से ही समझ में आ जाएगा कि वह अमुक पार्टी या तमुक नेता नहीं, जो भी सरकार में बैठता है या तथाकथित विपक्षी पार्टी की ओर से इस पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ नहीं लड़कर इसकी सेवा करता है, वही अध:पतन के दलदल में डूबता चला जा रहा है और उनके पीछे चलने वाले को भी डुबो रहा है।

प्रधानमंत्री ने दिल्ली के विक्षोभ प्रदर्शनकारियों को शांत रहने का उपदेश दिया है। छात्र-नौजवानों और आम आदमी का सवाल है–रायसिना हिल पर एकत्रित हुए हजारों-हजार छात्र-नौजवान जब शान्तिपूर्ण विक्षोभ प्रदर्शन करके राष्ट्रपति से मिलना चाह रहे थे तब वॉटर कैनन, लाठियों और आसूँ गैस से उनका स्वागत किसने किया–सरकार ने ही तो। लगातार बढ़ते विक्षोभ और उनकी जायज मांग को अनसुना करके व्यर्थता के पथ पर ठेल देने की साजिश किसकी थी–सरकार की ही तो थी। दिल्ली की कड़ाके की ठण्ड में पानी से भिगोकर छात्र-नौजवानों को तीतर-बीतर करने की सरकार की ही तो मंशा थी। लेकिन वह भी नाकाम हो गई। रात की कड़ाके की ठण्ड भी जब सड़कों पर जमा लोगों को हटा नहीं पाई, तब सरकार में जरा सी भी संवेदनशीलता अगर होती तो क्या सरकार का जायज मांग पर इकट्ठी हुई जनता के पास जाना और उनकी जायज मांग को पूरा करने की गारण्टी देना फर्ज नहीं बनता था। पर सरकार ने न तो माफी मांगी और न ही कोई आश्वासन दिया। इसलिए छात्र-छात्राओं, महिलाओं ने कहा–हम यहीं रहेंगे, हम चले गए तो सरकार सब भूल जाएगी। यही है देश के लोगों का कटु अनुभव। इसी तरह दिल्ली के रोष प्रदर्शन ने भारतीय राज्य व्यवस्था का असली चेहरा नग्न रूप से उजागर कर दिया है।

अन्त में विक्षुब्ध जनता के धैर्य का बांध टूट जाता है। पुलिसिया दमन-उत्पीड़न के पलट प्रतिरोध में उतर आते हैं छात्र-छात्राएं। पुलिस की लाठी छीन लेते हैं, लड़कियाँ पुलिस की गाड़ियों के आगे लेट जाती हैं, ढेले-पत्थर-फेंकती हैं। होने लगता है निर्मम लाठी चार्ज और आँसू गैस। सीना तान कर खड़े हो जाते हैं युवक-युवतियाँ। इतने में ही शासक और एक अंश का मीडिया गड़बड़ी होने का शोर मचा देता है, हिंसा की निन्दा पर उतर आता है, इसे 'गुण्डागर्दी', 'असामाजिक तत्वों का काम' करार देता है। राजसत्ता और प्रशासन उत्पीड़ित वंचित लोगों की बात न सुने इसमें हर्ज नहीं,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दिल्ली आन्दोलन के समर्थन में देश के अन्य राज्यों में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)

दिल्ली में पैरामेडिकल छात्रा से पाशविक सामूहिक बलात्कार की तीव्र निन्दा की

दिल्ली में 16 दिसम्बर की रात को चलती बस में 23 वर्ष की एक पैरामेडिकल छात्रा के साथ हुए अत्यंत बर्बर सामूहिक बलात्कार की घटना की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए एसयूसीआई (सी) की दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. प्रताप सामल ने 18 दिसम्बर को जारी एक बयान में कहा :

राजधानी शहर दिल्ली में रविवार को चलती बस में 23 वर्ष की एक पैरामेडिकल छात्रा के साथ बेहद दरिन्दगी के साथ हुए सामूहिक बलात्कार की घटना ने साबित कर दिया है कि महिलाओं के साथ छेड़छाड़ व अपहरण से लेकर बलात्कार, हत्या और कन्या भ्रूणहत्या व दहेज हत्या जैसे अपराधों की रोकथाम करने में सरकार और कानून लागू करने वाली अथोरिटियाँ बुरी तरह नाकाम रही हैं।

उन्होंने कहा कि इस पतनोन्मुख पूँजीवादी व्यवस्था की कभी न खत्म होने वाली और लगातार बढ़ती जाने वाली आर्थिक समस्याओं ने तो आम आदमी को बदहाली और कंगाली के कगार पर धकेल ही दिया है, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण व निजीकरण की जनविरोधी नीतियों ने सांस्कृतिक पतन की एक ऐसी प्रक्रिया शुरू कर दी है जिसने छोटी-छोटी बच्चियों से लेकर हर उम्र की महिलाओं को निहित स्वार्थों व असामाजिक तत्वों द्वारा किये जाने वाले हमलों की आसान शिकार बना दिया है। प्रिंट व इलैक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा मनोरंजन की चीज के तौर पर नारी देह की नुमाइश, यौन पर्यटन को प्रोत्साहन, प्राइमरी स्तर से स्कूलों में यौन शिक्षा को लागू करना, शराब की हजारों नई दुकानें खोलना आदि बहुत सारी नीतियाँ समाज को इस नैतिक-सांस्कृतिक पतन की ओर ले गई हैं। कॉमरेड सामल ने बताया कि इसके नतीजे के तौर पर कन्या भ्रूणहत्याओं व दहेज हत्याओं, तेजाबी हमलों, ऑनर किलिंगों, देह व्यापार के धंधे के लिए महिलाओं और लड़कियों की तस्करी, छेड़छाड़, अपहरण, बलात्कार व हत्याओं और पति व रिश्तेदारों द्वारा महिलाओं के क्रूर उत्पीड़न की घटनाओं में हाल के वर्षों में खतरनाक बढ़ोतरी हुई है। साथ ही यह बात भी है कि ऐसे बहुत सारे मामले साफ जाहिर वजह से दर्ज ही नहीं हो पाते हैं और उनकी संख्या दर्ज हुए मामलों से कहीं ज्यादा है।

महिलाओं पर आये दिन होने वाले अपराधों की रोकथाम करने में अथोरिटियाँ के नाकाम रहने के लिए कॉ. सामल ने उनकी कड़ी आलोचना की और माँग की कि अपराधियों को तुरन्त गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया जाए और उन्हें सख्त से सख्त सजा दी जाए ताकि दूसरों के लिए भी उदाहरण बन जाए। उन्होंने लोगों से आगे आने और ऐसे अपराधों की रोकथाम करने और सजा देने की त्वरित कार्यवाही करने के लिए सरकार पर दबाव डालने के लिए जोरदार जन आन्दोलन गठित करने की अपील की।

आजादी आन्दोलन के इन्कलाबी शहीदों को याद किया

ताउडू में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड राजेश गोस्वामी

ताउडू (हरियाणा): 19 दिसम्बर को स्थानीय पचगांव चौक में अमर शहीद क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल व शहीद अश्फाकउल्ला खां का शहादत दिवस ऑल इण्डिया डीएसओ व ऑल इण्डिया डीवाईओ की ओर से सभा करके मनाया गया। सभा में मुख्य वक्ता डीवाईओ के राष्ट्रीय कमेटी के सदस्य व रेवाड़ी के जिला अध्यक्ष कॉ. शेर सिंह थे। मंच का संचालन डीएसओ के हरियाणा प्रदेश सचिव कॉ. हरीश कुमार ने किया। सभा की अध्यक्षता चीला गांव के सरपंच सद्दीक ने की। डीवाईओ के राष्ट्रीय कमेटी के सदस्य गुड़गांव जिला सचिव कॉ. राजेश गोस्वामी, बसंत लाल व बृजमोहन ने भी अपनी बात रखी। सभा की शुरूआत क्रान्तिकारी गीतों से हुई तथा सभा का समापन क्रान्तिकारी नारों के साथ हुआ।

अमरोहा (उ.प्र.) : ग्राम अखबंदपुर, अमरोहा में 19 दिसम्बर को सभा करके शहीद अश्फाक उल्ला खां, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह व राजेन्द्र लाहिड़ी का शहादत दिवस सम्मान पूर्वक मनाया गया। सभा की अध्यक्षता ऑल इण्डिया डीवाईओ के जिला इंचार्ज कॉ. पवन कुमार ने की तथा संचालन कॉ. गंभीर सिंह ने किया। मुख्य वक्ता थे एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के जिला इंचार्ज कॉ. शील कुमार। सभा के प्रारम्भ में सिद्धराज, शील कुमार, ऋतु, नरेन्द्र व नीरज ने क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये। सभा में राजेन्द्र सिंह, दिग्राज सिंह, पवन कुमार, ऋतु चौधरी व सोमवती शर्मा ने भी अपने विचार रखे। सभा में सैकड़ों की संख्या में पुरुषों, महिलाओं और छात्र-छात्राओं ने शिरकत की।

कॉमरेड शील कुमार ने कहा कि शासक-शोषक पूँजीपति वर्ग और उसकी ताबेदार सरकारें क्रान्तिकारियों के नाम व इतिहास को मिटाने की साजिश रच रही हैं। इस युग के महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के आलोक में क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) व उसका छात्र-युवा संगठन देश भर में उन्हें याद करने और उनके जीवन-संघर्ष से सीख लेने का नौजवानों से आह्वान करता है। उन्होंने कहा कि पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के जरिये पूँजीवाद को उखाड़ फेंक कर और समाजवाद कायम करके ही हम शोषणहीन खुशहाल समाज बनाने का उन शहीदों का अधूरा सपना पूरा कर सकते हैं। उन्होंने सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जन कमेटियाँ बनाकर जोरदार आन्दोलन खड़ा करने की अपील की।

मुरादाबाद (उ.प्र.) : ऑल इण्डिया डीवाईओ द्वारा रेलवे प्रांगण में 19 दिसम्बर को सभा करके आजादी आन्दोलन के इन्कलाबी शहीदों, अश्फाक उल्ला खां, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह व राजेन्द्र लाहिड़ी का शहादत दिवस सम्मान पूर्वक मनाया गया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता मुनीशचन्द्र त्यागी ने की। सभा में ऑल इण्डिया डीवाईओ के प्रदेशाध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह, महाराजा हरीशचन्द्र महाविद्यालय के फाइन आर्ट के प्रो. डॉ. नरेन्द्र सिंह, महिला नेता कमलेश चाहल, विनोद विग एडवोकेट, शिशुपाल मधुकर व विजयपाल सिंह ने अपने विचार रखे, संचालन कॉ. मौ. गौरी ने किया। राम सिंह 'निशंक' और अशोक कुमार बिश्नोई ने क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये।

गजरौला (जेपी नगर) में भी इन क्रान्तिकारियों को सम्मान के साथ याद किया गया। स्मृति सभा को ऑल इण्डिया डीवाईओ के जिला सचिव कॉमरेड नौबहार सिंह व सह सचिव कॉ. नासिर अली, इशरार अहमद, पंकज सिंह व नजाकत अली ने सम्बोधित किया

शिक्षा बचाओ सम्मेलन

तोशाम (हरियाणा) : शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण और आठवीं तक बेरोकटोक पास करने आदि जनविरोधी शिक्षा नीतियों के खिलाफ अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ कमेटी, तोशाम (भिवानी) की ओर से 30 दिसम्बर को यहाँ पंचायत घर के प्रांगण में शिक्षा बचाओ सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता मास्टर राजकुमार ने की। सम्मेलन में बी एल जिन्दल सूईवाला पब्लिक स्कूल के प्रीसिंपल के पी परमार, ऑल इण्डिया डीएसओ के हरियाणा राज्य सचिव कॉ. हरीश कुमार, पूर्व सरपंच कॉ. जिले सिंह, भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन के राज्य अध्यक्ष कॉ. रामफल व बस्तीराम ने अपने विचार व्यक्त किये। मास्टर राजकुमार की अध्यक्षता में एक स्थानीय 11 सदस्यीय कमेटी भी गठित की गई। सम्मेलन से पहले दो मिनट का मौन रख कर मृतका 'दामिनी' को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शहीद उधम सिंह जयंती पर सभा

स्मृति सभा में भाषण देते हुए कॉ. बाबूराम

कुरूक्षेत्र : 26 दिसम्बर को यहाँ ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन (ऑल इण्डिया डीवाईओ) और ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन (ऑल इण्डिया केकेएमएस) के संयुक्त तत्वावधान में भारत के आजादी आन्दोलन की गैर समझौतावादी धारा के क्रान्तिकारी, महान देशभक्त, इन्कलाबी योद्धा शहीद उधम सिंह की 113वीं जयंती यथोचित सम्मान के साथ मनायी गई। इस अवसर पर कुरूक्षेत्र के छोटूराम पार्क में की गई स्मृति सभा की अध्यक्षता कॉ. रोशनलाल ने की और भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन के राज्याध्यक्ष कॉ. रामफल सभा के मुख्य वक्ता थे। ऑल इण्डिया केकेएमएस के बाबूराम व राजकुमार, ऑल इण्डिया डीवाईओ के कमल कुमार, कर्मचारी नेता जवाहरलाल व सुरेश ने भी शहीद उधम सिंह के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि शहीद उधम सिंह को याद करने और उनके जीवन-संघर्ष से सीख लेने का दिन है। सच्चाई और इन्साफ के लिए संघर्षरत लोगों को आज भी उनका जीवन-संघर्ष प्रेरणा देता है। उधम सिंह का बलिदान और अविस्मरणीय क्रान्तिकारी चरित्र हमारे लिए काफी शिक्षाप्रद और तात्पर्यपूर्ण है। उनका सपना आज भी अधूरा है। उनसे प्रेरणा लेकर उन्नत चरित्र हासिल करने के संघर्ष में आगे आने और समाज व सभ्यता के दुश्मन पूंजीवाद के खिलाफ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतनधारा को औजार बनाकर क्रान्तिकारी संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए लोगों का उन्होंने आह्वान किया।

दिल्ली में हुए जघन्य गेंग रेप की व शांतिपूर्ण रोष प्रदर्शन कर रहे लोगों पर बर्बर लाठीचार्ज की सभा में एक प्रस्ताव पारित करके कड़ी निन्दा की गई और सरकार से बलात्कारियों को उदाहरणमूलक सजा देने, अश्लीलता के प्रचार-प्रसार पर रोक लगाने व शराब व अन्य नशों को बढ़ावा देना बंद करने की मांग की गई।

डीएवी स्कूलों में फीस वृद्धि के खिलाफ एआईडीएसओ का विधान सभा पर प्रदर्शन

भुवनेश्वर (ओडिशा) : डीएवी स्कूलों में ताजा फीस वृद्धि वापस लेने, गतिरोध दूर करने और निजी स्कूलों के फीस ढाँचे पर नियंत्रण रखने के लिए निजी शिक्षण संस्थाओं की वार्षिक आय-व्यय का हिसाब-किताब देने का प्रावधान करने और प्रबंधन द्वारा किए जा रहे शिक्षकों और कर्मचारियों के शोषण पर रोक लगाने के उपाय करने की माँगों को लेकर ऑल इण्डिया डीएसओ की ओर से यहाँ 19 दिसम्बर को विधान सभा के सामने एक प्रदर्शन किया गया। वहाँ हुई विरोध सभा को संगठन के उपाध्यक्ष कॉ. गणेश त्रिपाठी, सचिव कॉ. शिवाशीष प्रहराज, सचिव मण्डल सदस्य कॉ. सिद्धार्थ रथ, कॉ. बालाभंटारे, सप्तऋषि राउल, भाग्यरवि दास, बनिता स्वैन व सरोजनी बेहरा ने सम्बोधित किया था।

एसयूसीआई (सी) ने किया बैंकिंग कानून (संशोधन) बिल, 2011 का विरोध और इस मजदूर-विरोधी कानून को रद्द करने के लिए जोरदार संगठित आन्दोलन का आह्वान

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉ. प्रभाष घोष में 20 दिसम्बर को निम्न बयान जारी किया:

हम गहरी चिन्ता के साथ गौर करते हैं कि कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार देश के एकाधिकारी पूँजीपतियों और विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की मुनाफा लिप्सा की पूर्ति करने के अपनी जीतोड़ कोशिश में 'आम आदमी' की जिन्दगी में कहर बरपाने पर तुली हुई है और 'सुधार' के नाम पर एक पर एक काले कानून बनाने लग रही है। जोरदार जनमत की पूर्ण उपेक्षा करते हुए इसने एक बार फिर 19 दिसम्बर 2012 को 'बैंकिंग कानून (संशोधन) बिल 2011' नामक एक और काला विधेयक पास कर दिया है जो निजी क्षेत्र के बैंकों में शेयर धारकों के 10 से 20 प्रतिशत और पब्लिक सेक्टर बैंकों में 1 से 10 प्रतिशत मताधिकार को बढ़ाते हुए इस क्षेत्र में और ज्यादा पूँजी निवेश का रास्ता खोल देने के जरिए पब्लिक सेक्टर बैंकों के उत्तरोत्तर निजीकरण और विदेशी एकाधिकारी पूँजी को भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में निर्णायक स्थिति में पहुँचा देने का सबब बनेगा। हालांकि इसे पास कराने के दबाव में, सरकार को फ्यूचर्स में व्यापार, खाद्य सामग्रियों सहित उपभोग की विभिन्न चीजों में अंधाधुंध सट्टेबाजी के एक तरीके के लिए बैंकों को इजाजत देने सम्बन्धी प्रावधान खारिज करना पड़ा, फिर भी यकीनन यह सट्टेबाजी और जुआरियों के लिए बढ़ी हुई बैंक फण्डिंग की इजाजत देने की सरकार की मंशा को उजागर करता है। साफ तौर पर यह कदम आम तौर पर सब क्षेत्रों और खासकर बैंकिंग क्षेत्र में निजीकरण की प्रक्रिया को तेज करने के लिए पब्लिक सैक्टर के उद्योगों को ध्वस्त करने के रास्ते पर एक और कदम है। जिस क्षेत्र में मजदूर वर्ग के शक्तिशाली आन्दोलन की वजह से सरकार को बैंकिंग उद्योग का राष्ट्रीयकरण करना पड़ा था ताकि बैंकिंग क्षेत्र में पूर्ण अव्यवस्था और गड़बड़झाले का खात्मा किया जा सके और सेवा में कवरेज नेटवर्क का विस्तार किया जा सके। आज यह बात साफ है कि सरकार देश के एकाधिकारी पूँजीपतियों की जरूरत पूरी करने के लिए न केवल राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया को उलट देने पर आमादा है बल्कि इस नाजुक क्षेत्र को विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए भी खोल देने पर उतारू है ताकि उन्हें मनमाने ढंग से भारतीय अर्थव्यवस्था का दोहन करने में सक्षम बना सके। यह भी याद दिलाने की जरूरत है कि भारतीय बुर्जुआ सरकार की ओर से उठाया गया यह घिनौना कदम लाखों लोगों को नौकरी से निकालने और देखते ही देखते निवेशकों की करोड़ों डॉलर की धनराशि का सफाया कर देने वाले सब-प्राइम संकट के पैदा हो जाने के बाद निजी क्षेत्र के बड़े-बड़े सैकड़ों बैंकों के दिवालिया हो जाने के बाद में होने वाले वाले अंजाम से पहले ही बदहाल भारतीय मेहनतकशों की जिन्दगी में और भी विनाश और तबाही लाजिमी तौर पर लाने देने वाला कदम है।

दिल्ली के लड़ाकू...

(पृष्ठ 5 का शेष)

लाठी-आँसू गैस, पानी का फौहारा चला कर जायज मांग के आन्दोलन में अत्याचार ढाहे, इससे उनको कुछ गुरेज नहीं है। लेकिन जिस पल निहत्थे लोग पलट कर प्रतिरोध करने लगें, पुलिस के हमले के खिलाफ लड़ें, तभी उसे हिंसा, हिंसा कह कर एक पक्ष इसकी निन्दा करने लगेगा। इसका मायने है–मार खाओ, राज्य के रक्षकों के बूटों तले पिसकर मर जाओ। लेकिन पलट वार मत करो, जुल्म सहते रहो। जनता के लिए अहिंसा के इस झूठे प्रवचन ने भारत की शोषित जनता का काफी नुकसान किया है।

'दामिनी' के लिए इन्साफ की लड़ाई जारी है। अब आन्दोलन का केन्द्रस्थल इण्डिया गेट और रायसिना हिल की बजाय जंतर मंतर बन गया है। कड़ाके की ठण्ड में भी रोजाना हजारों छात्र-छात्राएं, युवक-युवतियाँ और आम लोग वहाँ चल रहे धरने-प्रदर्शनों में जुटते हैं। हमारे ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक, ऑल इण्डिया डीवाईओ की राज्य सचिव कॉ. प्रकाश और ऑल इण्डिया डीएसओ के राज्याध्यक्ष कॉ. भास्करानंद व राज्य सचिव प्रशांत कुमार भी नेतृत्वकारी भूमिका में आ गये हैं। विजय चौक व इण्डिया गेट पर प्रदर्शनकारियों पर पुलिस के द्वारा किये गये बर्बर लाठीचार्ज में लहुलुहान हुए सैकड़ों छात्रों में ऑल इण्डिया डीएसओ के राज्याध्यक्ष कॉ. भास्करानंद भी थे।

भारतवासी जानते हैं कि सामाजिक समस्याओं पर, अन्याय-अत्याचार पर प्रतिक्रिया करने की परम्परा में दिल्ली का जनसमाज सबसे शीतल है। सैकड़ों घटनाओं पर भी वह क्षुब्ध, क्रुद्ध नहीं होता, प्रतिवाद-प्रतिरोध में शामिल नहीं होता। उसी दिल्ली की छात्र-युवा शक्ति अगर आज जन-प्रतिरोध का नया अध्याय रच रही है, तो बाकी भारत इस तरह क्यों नहीं जाग रहा है? देश की जनता, छात्र-नौजवानों का सवाल है–देश कब जागेगा? हाँ, आज जो अधेड़ उम्र में पहुँच गए हैं, बुजुर्गों में गिने जाते हैं, उन्होंने दिल्ली के इस आक्रोश में अवश्य ही दिखाई दी है पचास से साठ के दशक की कलकत्ता की तस्वीर, छात्र-नौजवानों का वही लड़ाकू चेहरा। कलकत्ता और पश्चिम बंग ही कभी सारे भारतवासियों के लिए जन प्रतिवाद-प्रतिरोध का प्रेरणा स्थल और शासकों के लिए भय की नगरी हुआ करता था। कांग्रेस-सीपीएम और अब तृणमूल के नेताओं ने उस कलकत्ता के प्राण और चेतना को तिल-तिल कर पंगू कर दिया है। यही हाल अन्य प्रान्तों का है। इन्होंने युवा समाज को चुनावी मशीनरी में, चोरी-भ्रष्टाचार में फंसाकर, शराब-अश्लीलता में डुबाकर उनके यौवन के तेज को विपथगामी बना दिया है। लेकिन दिल्ली ने दिखा दिया है कि इस तरह यौवन को खत्म नहीं किया जा सकता। इसलिए देश फिर जागेगा। जिसका नमूना जगह-जगह देखा गया 18 दिसम्बर से शुरू हुए हजारों-हजार छात्र-छात्राओं के स्वत:स्फूर्त रोष प्रदर्शनों में। यही आगामी दिनों के प्रतिवाद-प्रतिरोध का झण्डा उठाएंगे। आये दिन नारी की अस्मत लूटी जाने, बलात्कार होने से जनजीवन का जितना सर्वनाश हुआ है उससे कोई भी प्रान्त अछूता नहीं है। असंख्य घटनाओं ने साबित कर दिया है कि कभी जो गाँव-शहरों में देर रात तक भी बेखटके चल-फिर सकती थी, आज दिन के उजाले में भी महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। देश भर में सामाजिक माहौल का ये हाल शासक पार्टियों ने कर दिया है जिसे देख कर संवेदनशील लोगों की जबान पर यह बात है कि देश में कब छात्र-नौजवान और नागरिक समाज दिल्ली की तरह जाग उठेगा। हम कहते हैं, उसके लिए संगठित सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन की जरूरत है। पूरा भारत ही जन-विक्षोभ के बारूद के ढेर पर खड़ा है। जरूरत है उसे संगठित रूप देने की। कौन दे सकता है? दे सकता है उपयुक्त शक्ति संपन्न संगठित वही राजनैतिक दल जिसका सुयोग्य नेतृत्व है।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing : 5 January, 2012

मजदूर–विरोधी नीतियों के खिलाफ हजारों मजदूरों ने किया संसद मार्च

दो दिन की हड़ताल पर जाने का लिया फैसला

दिल्ली : ऑल इण्डिया यूटीयूसी, सीआईटीयू, एआईटीयूसी, इंटक, बीएमएस, एचएमएस, यूटीयूसी, टीयूसीसी, एलपीएल, सेवा और स्वतंत्र कर्मचारी फेडेरेशनों के संयुक्त बैनर तले हजारों श्रमिकों ने सरकार की मजदूर–विरोधी नीतियों पर अपना आक्रोश जताते हुए 20 दिसम्बर को संसद मार्च किया। प्रदर्शनकारी श्रम कानूनों के उल्लंघन, श्रम की ठेकेदारी प्रथा, और सर्वोपरि, कमरतोड़ महंगाई के खिलाफ और पर्याप्त न्यूनतम वेतन और सबके लिए सामाजिक सुरक्षा की मांगों के बैनर, प्लैकार्ड हाथों में थामे हुए थे। संसद मार्ग पर हुई सभा को केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के नेताओं ने सम्बोधित किया। 20 और 21 फरवरी, 2013 की देश भर में दो दिन की अखिल भारतीय हड़ताल का ट्रेड यूनियन संगठनों की ओर से संयुक्त तौर पर ऐलान किया गया। इससे पहले 18 और 19 दिसम्बर को उनकी मांगों पर सरकार द्वारा कोई कार्रवाई न किये जाने पर अपना विरोध प्रकट करने के लिए देशभर में सत्याग्रह और जेल भरा संगठित किया गया।

20 दिसम्बर को संसद मार्ग पर हुई विरोध सभा की अध्यक्ष मण्डली में ऑल इण्डिया यूटीयूसी के सचिव कॉ. अचिंत्य सिन्हा थे और संगठन की ओर से वक्ता थे ऑल इण्डिया यूटीयूसी के सचिव कॉ. सत्यवान।

संसद मार्ग पर श्रमिक रैली को सम्बोधित करते हुए ऑल इण्डिया यूटीयूसी के सचिव कॉ. सत्यवान।

दिल्ली आन्दोलन के समर्थन में अन्य राज्यों में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)

अनन्तपुर

विशाखापट्टनम

चेन्नई

दिल्ली में प्रदर्शनकारियों पर बर्बर लाठीचार्ज का एसयूसीआई (सी) ने किया विरोध

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 22 दिसम्बर को जारी बयान में कहा: जहाँ यह अपेक्षित था कि केन्द्रीय व दिल्ली सरकारें पीड़िता की ऐसी तबाही से रक्षा करने में नाकाम रहने के लिए बलात्कार–पीड़िता और दिल्ली के लोगों से माफी मांगेंगी और उन्हें यह आश्वासन देंगी कि आइन्दा कभी ऐसा नही होगा, हमें यह पा कर बड़ा सदमा पहुँचा कि जीवन के हर क्षेत्र से हर तबके के लोगों से आये प्रदर्शनकारियों पर, जो राष्ट्रपति भवन के सामने अपनी शांतिपूर्ण विशाल रैली से समुचित और तत्काल कार्यवाही करने की जायज माँग कर रहे थे, दिल्ली पुलिस बर्बरता से टूट पड़ी, आँसू गैस के गोलों, वाटर कैनन का इस्तेमाल किया और लाठीचार्ज किया। हम कांग्रेस–नीत दिल्ली सरकार और पुलिस की इस पूर्णत: अवांछित कार्रवाई के लिए उनकी कड़ी निन्दा करते हैं और सरकार से आग्रह करते हैं कि तुरन्त अपना कर्तव्य पालन करे, जिसे करने की माँग आज पूरा देश उससे कर रहा है।

हम यह गौर किये बिना नहीं रह सकते हैं कि दिल्ली में और इसी तरह पूरे देश में भी, जिस तरह का दिल्ली में हुआ ऐसे अपराधों की रोकथाम करने में शासक सरकारें इतनी बुरी तरह से नाकाम रही हैं कि पूरे देश भर में महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों के समक्ष महिलाओं के जीवन व इज्जत–आबरू की कोई सुरक्षा नहीं है। एक तरफ तो देश की पूँजीवादी व्यवस्था छात्र–नौजवानों और आम लोगों को इन्सानियत और मूल्यबाधों से वंचित करती जा रही है जिसके फलस्वरूप उनका एक हिस्सा बढ़ते अपराधों का शिकार होता जा रहा है वहीं दूसरी तरफ इन अपराधों के खिलाफ कड़े कदम उठाये बिना, सरकारें असल में इन अपराधों और अपराधियों को बढ़ावा देने में संलिप्त हैं। ऐसी स्थिति में, दिल्ली के छात्र–नौजवान और आम आदमी जिस बहादुरी से तमाम हमलों का मुकाबला करते हुए माँगों को लेकर प्रतिवाद में सड़कों पर उतर आये हैं वह कोशिश बहुत ही काबिले तारीफ है। हम उम्मीद करते हैं कि देश भर में छात्र–नौजवान और आम आदमी इन उठायी गई माँगों को पूरी करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों को मजबूर कर देने के लिए एकजुटता में दृढ़ संकल्प के साथ आगे आयेंगे।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली–5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी–70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली–35 से मुद्रित, दूरभाष: 011–25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com